Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
Vol. 8, Issue 2, April 2022
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (online)

समकालीन महिला लेखिकाओं में सूर्यबाला का स्थान

प्रा. व्ही. बी खाडे

कला महाविद्यालय नांदुरघाट केज

समकालीन महिला लेखिकाओं में सूर्य बाला का अपना विशेष महत्त्व है । इनकी इनकी रचनाओं में सामाजिक मान्यताओं में पनपी नारी की विवशताओं और क्रूर नियति का सुंदर चित्रण हुआ है । इनके नारी पात्र सूक्ष्म और समर्थ नारी की भूमिका को उजागर करते है । स्त्री अपने जीवन को जीने के लिए हर क्षण हर पल समझौता करने के लिए बाध्य होती है और इन समझौतों में ही भावी पिढी की भूमिका तयार हो जाती है । इस स्थिति को सूर्यबाला ने बडी गहराई से उजागर करने का प्रयास किया है । उनका रचना संसार है - 'दिशाहीन ' ,' थाली भर चांॅद ' , ' गृह प्रवेश ' , ' मानुष ग्रंथ ' , ' सांॅझवाँती ' , ' कात्यायनी संवाद ' , 'यामिनी कथा ' , ' पाच लंबी कहानियाँ ' आदी प्रमुख कहानी संग्रह है।

साहित्य की कई विधावों में उन्होंने साहित्य सृजन किया है । कहानी , उपन्यास, बालसाहित्य, हास्य - व्यंग आदि विधाओं में से कहानी सूर्य बाला जी की प्रमुख विधा रही है। उनके साहित्य का प्रमुख उद्देश्य नारी की समस्याओं का अंकन कर उसे पुरुषों के बराबर का स्थान देता रहा है । नारी के प्रति सूर्य बाला का दृष्टिकोण अत्यंत उदार है । उन्होनें अपने साहित्य के द्वारा नारी मन, उसके संघर्ष को चित्रित किया है ।

सूर्य बाला जी ने अपनी कहाँनीयो द्वारा नारी का शोषण, नारीमुक्ती, दिशाहीन युवक का चित्रण, भ्रष्टाचार कामकाजी नारी की समस्याएँ, विदेश का चित्रण, पति - पत्नी के संबंध, पिता-पुत्र आदी विषयों पर सशक्त तथा यथार्थवादी कहाँनियाँ लिखी है । उन्होनें समाज के सभी वर्गों का मन को स्पर्श करने वाला चित्रण किया है । उन्होनें अपनी किसी भी परंपरा से नही जोडा है। आपकी ' तोहफा' सशक्त कहानी है । इसमे एक ऐसे पिता है । जिन्हें अपने पुत्र की कोमल भावना की अपेक्षा बॉस की प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व है । एक गैर जिम्मेदार संवेदन शून्य परंतु डरपोक पिता को उजागर किया है ।

' योद्धा ' कहानी जीवन की वास्तविकता को अभिव्यक्त करती है । इस कहानी में एक ऐसे भाई का चित्रण है । जो वास्तव में योद्धा है पर उसका श्रेय दुसरे भाई को दिया जाता है। सूर्यबाला जी की ' निर्वासित ' कहानी के संबंध मे डॉ. मंजू शर्मा जी का मंतव्य है " निर्वासित में भी टूटते संबंधो और मोहभंग से उत्पन्न टूटन की बडी सशक्त अभिव्यक्ती हुई है ।

बेटे पहले तो माँ- बाप को अपने पास बुलाते है । फिर किस तरह से बात - बात में उन्हें एहसास दिलाते है कि वे बुढे है नकारा है ।" 1 आधुनिक काल में रिश्तों में आया बिखराव भी सूर्यबाला की कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

सूर्य बाला जी ने कहानी के साथ -साथ उपन्यासों का भी सृजन किया है । ' धर्मयुग ' में आपका पहला उपन्यास 'मेरे संधि पत्र ' प्रकाशित हुआ है । इस उपन्यास में शिवा नामक नारी का संघर्ष है। यह संघर्ष अपनी अस्मिता की रक्षा के लिये है ।

'यामिनी कथा ' सूर्यबाला का एक सामाजिक उपन्यास है । यामिनी नामक एक ऐसे स्त्री का चित्रण किया है । जिसका प्यार टुकडे- टुकडे में बँटा हुआ है । उपन्यास की नायिका यामिनी दो पुरुष और दो संतान के बीच पुरी तरह पिस जाती है। विश्वास से उसका विवाह होता है । लेकिन उसके दंडेपन से वह परेशान है । पुतल के सहारे जीवन जीने वाले यामिनी एक दिन दुसरे पुरुष निखिल से टकराती है । तीसरा पुरुष जिसे अभी वह तक वह शिशु मानती आयी है । उसी के रक्त दुध से गढा-सा उसका ही पुतल वह निखिल की प्रति स्पर्धा में पूरी तरह उत्तर आता है और अपने हो अपने को सहेजने की कोशिश मे बिखर- बिखर जाती है।" माँ को संॅभालती है तो प्रिया उलझ जाती है। पत्नी को आगे लाती है तो माँ अभियोगिनी बन जाती है । चुन चुन का जन्म स्थिति को और उलझा देता है । अब अकेली यामिनी है और हर ओर अभियोग से उठी ऊँगलियाँ क्या क्या करे वह । " 2 संतान और पति के बीच तुटती नारी की व्यथा सूर्य बाला ने बहुत खूब से कागद पर उतारी है।

'अग्निपंखी ' नामक उपन्यास में एक विधवा नारी की समस्याएंॅ शिक्षित बेरोजगार युवक की समस्याएंॅ, आधुनिक युग की मशीनयुग समस्याओं का चित्रण किया है। इस उपन्यास मे विधवा तथा बेरोजगार युवक की करुणागाथा है । सूर्य बाला जी ने जयशंकर के माध्यम से समूचे भारत वर्ष के देहाती अर्द्धशिक्षित युवकों की बेरोजगारी, बेकारी की वजह से जिंदगी कैसे बद्तर बन जाती है इसका यथार्थ चित्रण किया है । अपने परिवार के लोग ताने देते है तब मन उब जाता है । लोग कहने लगे है कि , " देखो लो आजकल पढ़े- लिखे लडको की लायकीयत । अरे , नौकरी कैसे नही मिलती ? ... बात असल में यह है । कि चाचा ताऊ के पैसों पर ऐश करने की आदत पड गयी है । फिर भला क्यों पैर हिलाए? नौकरी- चाकरी का हाल पूछो तो ऐसे गुर्राता है जैसे उसे गाली दि हो । " 3

सुबह के इंतजार तक एक सामाजिक उपन्यास है । मानू नाम एक ऐसी युवती के संघर्षों की गाथा है , जिसका परिवार आर्थिक दृष्टि से सामान्य है । परिवार की आर्थिक स्थिती सामान्य होने के कारण उसका स्कूल जाना छूट जाता है । माँ नौकरी के लिए दर - दर ठोकरे खाती है ।

मानू के माध्यम से एक साहसी लडकी का चित्रण हुआ है । वह अपने जीवन का त्याग, बलिदान करके आपने भाई को डॉक्टर बनाती है । वह सन्मान प्रतिष्ठा का जीवन जीने के लिए विद्रोह करती है। एक नही सुबह के इंतजार में वह अपने जीवन को सार्थक बनाती है ।

दीक्षांत नामक उपन्यास वर्तमान युग की शिक्षा प्रणाली को सजीवता के साथ उजागर करता है। सूर्य बाला जी ने शर्मा सर के माध्यम से आज के इमानदार, निष्ठावान , विनम्र सच्चे व्यक्ति की यातना कथा अपने करुणतम लेकिन विश्वसनीय रूप में उतारी है । लेकिन भ्रष्ट समाज ने कुछ भी न करने दिया उन्हें । शांत और सुखद ढंग से जीने को मोहलत तक नही दी ।

निष्कर्ष : इस प्रकार सभी दृष्टी से समकालीन महिला लेखन सशक्त है। इन साहित्यकारों में सूर्य बाला जी ने अपना अलग स्थान बनाया है । उनका साहित्य महिलाओं के लिए प्रेरणा देने वाला है ।

समकालीन महिला लेखकाएँ, नारीवादी दृष्टि को प्रस्तुत करने में सबसे अधिक सफल दिखाई देती है । इन महिला साहित्यकारों ने अपने साहित्य के द्वारा नारी जीवन के अत्यंत प्रभावशाली और सजीव चित्र प्रस्तुत किये है ।

‘ नारी जागरण ’ के इस युग मे नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की तलाश में दो कदम आगे बढ रही है। सभी दृष्टी से समकालीन महिला लेखन सशक्त है । इन महिला साहित्यकारों में सूर्य बाला जी ने अपना एक अलग अलग स्थान बताया है । उनका साहित्य महिलाओं के लिए प्रेरणा देने वाला है । उनकी भाषा सहज तथा प्रभाशाली है ।

अत: हम कह सकते है। कि, समकालीन महिला लेखन स्त्री के आत्मविश्वास को उनकी अस्मिता को जागृत करने वाला साहित्य है । सूर्य बाला जी अन्य महिला साहित्यकारों की तुलना मे सबसे और श्रेष्ठ है ।

संदर्भ :

1) समकालीन हिंदी कहानी : - डॉ. पुष्पपाल सिंह
2) यामिनी कथा, समीक्षा- सुदर्शन द्विवेदी साप्ताहिक पृष्ठ 201
3) अग्निपंखी, सूर्यबाला, पृष्ठ 105